



कमला नेहरू महिला महाविद्यालय

हिंदी विभाग : ई - पत्रिका

हिंदी भारती



अक्टूबर - 2017



शुभ दिपावली



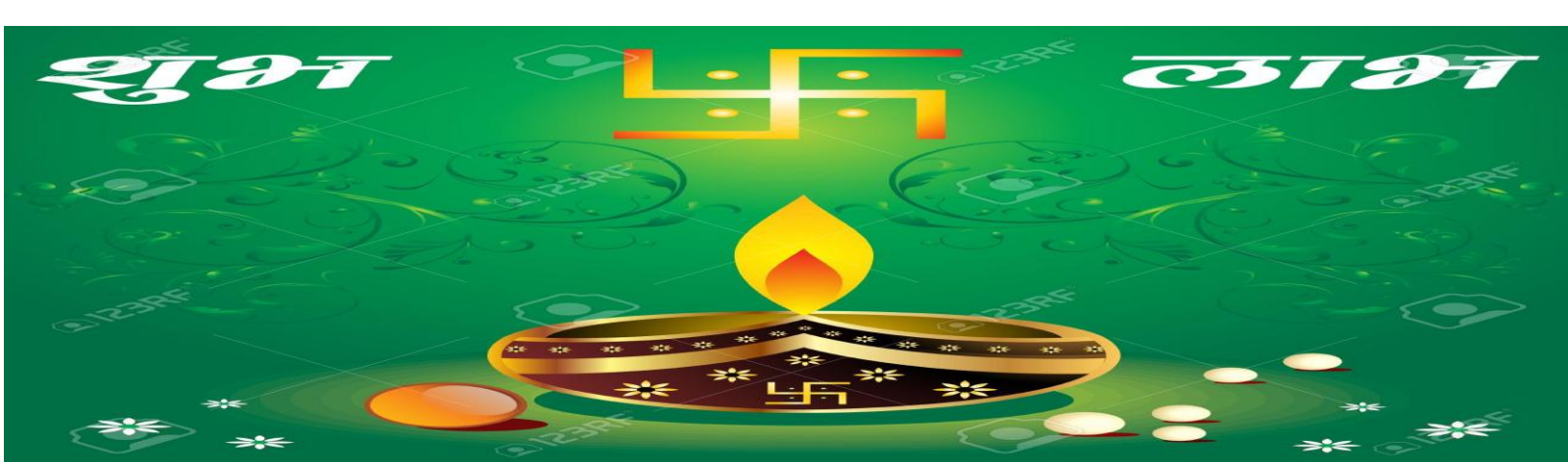
संपादक मंडली

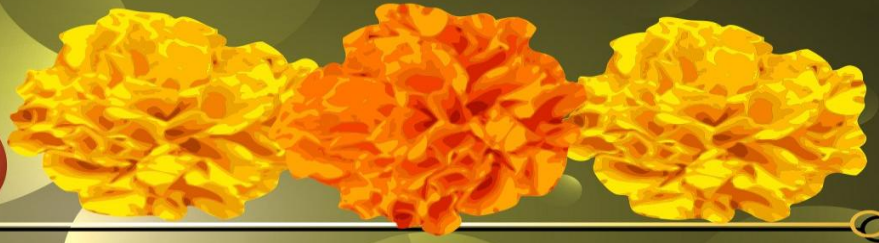
संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

उप – संपादक : कु. प्रियंका प्रियदर्शिनी परिडा

कु. शुभश्री शताब्दी दास





शुभ दीपावली



संपादकीय

“दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं” के साथ “हिंदी भारती” का द्वितीय संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस संस्करण में “हिंदी भारती” तकनीकी स्तर पर एक कदम आगे बढ़ा रही है। इस संस्करण में अधिकांश लेख टंकण कर प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है, एवं टंकण भी छात्राओं ने निष्ठापूर्वक सीख कर स्वयं ही किया है। एक छोटा सा कदम बड़े लक्ष्य की ओर। एक इरादा भाषा एवं साहित्य के माध्यम से समाज में परिवर्तन की कोशिश का। हिंदी विभाग की ओर से यह पहला प्रयास है, जिसमें कोशिश की गई है कि सृजन के साथ - साथ भाषा एवं साहित्य से सम्बंधित अन्य महत्वपूर्ण जानकारी भी पाठकों तक समय - समय पर पहुँचती रहे।

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा



आलोक पर्व की ज्योतिर्मयी देवी लक्ष्मी

- हजारी प्रसाद द्विवेदी

मार्कण्डेय पुराण के अनुसार समस्त सृष्टि की मूलभूत आद्याशक्ति महालक्ष्मी है। वह सत्त्व, सज और तम तीनों गुणों का मूल समवाय है। वही आद्याशक्ति है। वह समस्त विश्व में व्याप्त होकर विराजमान है। वह लक्ष्य और अलक्ष्य, इन दो रूपों में रहती है। लक्ष्य रूप में यह चराचर जगत् ही उसका स्वरूप है और-अलक्ष्य रूप में यह समस्त जगत् की सृष्टि का मूल कारण है। उसी से विभिन्न शक्तियों का प्रादुर्भाव होता है। दीपावली को इसी महालक्ष्मी का पूजन होता है। तामसिक रूप में वह क्षुधा, तृष्णा, निद्रा, कालरात्रि, महामारी के रूप में अभिव्यक्त होती है, राजसिक रूप में वह जगत् का भरण-पोषण करने वाली 'श्री' के रूप में उन लोगों के घर में आती है, जिन्होंने पूर्व-जन्म में शुभ कर्म किए होते हैं, परन्तु यदि इस जन्म में उनकी वृत्ति पाप की ओर जाती है, तो वह भयंकर अलक्ष्मी बन जाती है। सात्त्विक रूप में वह महाविद्या, महावाणी भारती वाक् सरस्वती के रूप में अभिव्यक्त होती है। मूल आद्याशक्ति ही महालक्ष्मी है।

शास्त्रों में भी ऐसे वचन मिल जाते हैं, जिनमें महाकाली या महासरस्वती को ही आद्याशक्ति कहा गया है। जो लोग हिन्दू शास्त्रों की पद्धति से परिचित नहीं होते, वे साधारणतः इस प्रकार की बातों को देखकर कह उठते हैं कि यह 'बहुदेववाद' है। यूरोपियन पंडितों ने इसके लिए 'पॉलिथीज्म' शब्द का प्रयोग किया है। पॉलिथीज्म या बहुदेववाद से एक ऐसे धर्म का बोध होता है, जिसमें अनेक छोटे-देवताओं की मण्डली में विश्वास किया जाता है। इन देवताओं की मर्यादा और अधिकार निश्चित होते हैं। जो लोग हिन्दू शास्त्रों की थोड़ी भी गहराई में जाना आवश्यक समझते हैं, वे इस बात को कभी नहीं स्वीकार कर सकते। मैक्समूलर ने बहुत पहले बताया था कि वेदों में पाया जानेवाला 'बहुदेववाद' वस्तुतः बहुदेववाद है ही नहीं, क्योंकि न तो वह ग्रीक-रोमन बहुदेववाद के समान है, जिसमें बहुत-से देव-देवी एक महादेवता के अधीन होते हैं और न अफ्रीका आदि देशों की आदिम जातियों में पाए जानेवाले बहुदेववाद के समान है जिसमें छोटे-मोटे अनेक देवता स्वतन्त्र होते हैं। मैक्समूलर ने इस विश्वास के लिए एक शब्द सुझाया था-हेनोथीज्म, जिसे हिन्दी में 'एकैकदेववाद' शब्द से कुछ-कुछ स्पष्ट किया जा सकता है। इस प्रकार के धार्मिक विश्वास में अनेक देवता की उपासना होती अवश्य है, पर जिस देवता की उपासना चलती रहती है, उसे ही सारे देवताओं से श्रेष्ठ और सबका हेतुभूत माना जाता है। जैसे जब इन्द्र की उपासना का प्रसंग होगा, तो कहा जाएगा कि इन्द्र ही आदि देव हैं, वरुण, यम, सूर्य, चन्द्र, अग्नि सबका वह स्वामी है और सबका मूलभूत है। पर जब अग्नि की उपासना का प्रसंग होगा तो कहा जायेगा कि अग्नि ही मुख्य देवता है और इन्द्र, वरुण आदि का स्वामी है और सबका मूलभूत देवता है, इत्यादि।

परन्तु थोड़ी और गहराई में जाकर देखा जाये तो इसका स्पष्ट रूप अद्वैतवाद है। एक ही देवता है, जो विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त हो रहा है। उपासना के समय उसके जिस विशिष्ट रूप का ध्यान किया जाता है, वही समस्त अन्य रूपों में मुख्य और आदिभूत माना जाता है। इसका रहस्य यह है कि साधक सदा मूल अद्वैत सत्ता के प्रति सजग रहता है। अपनी रुचि और संस्कारों और कभी-कभी प्रयोजन के अनुसार वह उपास्य के विशिष्ट रूप की उपासना अवश्य करता है, परन्तु शास्त्र उसे कभी भूलने नहीं देना चाहता कि रूप कोई हो, है वह मूल अद्वैत सत्ता की ही अभिव्यक्ति। इस प्रकार हिन्दू शास्त्रों की इस पद्धति का रहस्य यही है कि उपास्य वस्तुतः मूल अद्वैत सत्ता का ही रूप है। इसी बात को और भी स्पष्ट करके वैदिक ऋषि ने कहा था कि जो देवता अग्नि में है, जल में है, वायु में है, औषधियों में है, वनस्पतियों में है, उसी महादेव को मैं प्रणाम करता हूँ।

आज से कोई दो हजार वर्ष पहले से इस देश के धार्मिक साहित्य में और शिल्प और कला में यह विश्वास मुखर हो उठा है कि उपास्य वस्तुतः देवता की शक्ति होती है। यह नहीं है कि यह विचार नया है, पहले था ही नहीं, पर उपलब्ध धार्मिक साहित्य और शिल्प और कला-सामग्री में यह बात इस समय से अधिक व्यापक रूप में और अत्यधिक मुखर भाव से प्रकट हुई दिखती है। इस विश्वास का सबसे बड़ा आवश्यक अंग यह है कि शक्ति और शक्तिमान् में कोई तात्त्विक भेद नहीं है, दोनों एक हैं।

चन्द्रमा और चन्द्रिका की भाँति वे अलग-अलग प्रतीत होकर भी तत्त्वतः एक हैं-अन्तर नैव जानी मश्चन्द्र-चन्द्रिकयोरिव। परन्तु उपास्य शक्ति ही है। जो लोग इस विश्वास को अपनी तर्कसम्मत सीमा तक खींचकर ले जाते हैं, वे शक्त कहलाते हैं। जो शक्ति और शक्तिमान् के एकत्व पर अधिक ज़ोर देते हैं, वे शाक्त नहीं कहलाते। मगर कहलाते हों या न कहलाते हों, शक्ति की उपास्यता पर विश्वास दोनों का है। जिन लोगों ने संसार की भरण-पोषण करनेवाली वैष्णवी शक्ति को मुख्य रूप से उपास्य माना है, उन्होंने उस आदिभूता शक्ति का नाम 'महालक्ष्मी' स्वीकार किया है। दीपावली के पुण्य-पर्व पर इसी आद्याशक्ति की पूजा होती है। देश के पूर्वी हिस्सों में इस दिन महाकाली की पूजा होती है। दोनों बातों में कोई विरोध नहीं है। केवल रुचि और संस्कार के अनुसार आद्याशक्ति के विशिष्ट रूपों पर बल दिया जाता है। पूजा आद्याशक्ति की ही होती है। मुझे यह ठीक-ठीक नहीं मालूम कि देश के किसी कोने में इस दिन महासरस्वती की पूजा होती है या नहीं। होती हो तो कुछ अचरज की बात नहीं होगी। दीपावली का पर्व आद्याशक्ति के विभिन्न रूपों के स्मरण का दिन है।

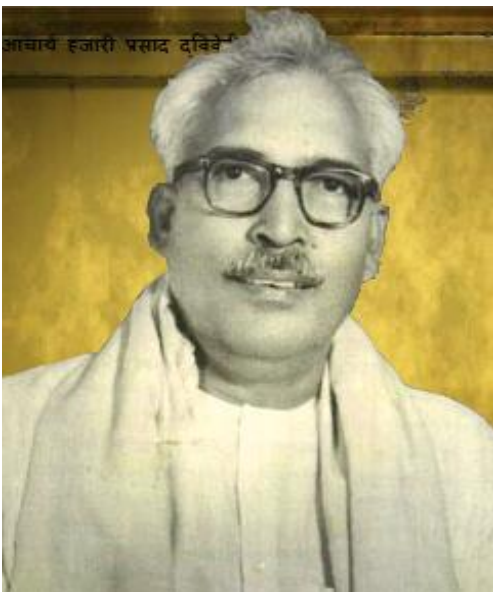
यह सारा दृश्यमान जगत् ज्ञान, इच्छा और क्रिया के रूप में त्रिपुटीकृत है। ब्रह्म की मूल शक्ति में इन तीनों का सूक्ष्म रूप में अवस्थान होगा। त्रिपुटीकृत जगत् की मूल कारणभूता इस शक्ति को 'त्रिपुरा' भी कहा जाता है। आरम्भ में जिसे महालक्ष्मी कहा गया है उससे यह अभिन्न है। ज्ञान रूप में अभिव्यक्त होने पर सत्त्वगुणप्रधान सरस्वती के रूप में, इच्छा रूप में रजोगुण प्रधान लक्ष्मी के रूप में और क्रिया रूप में तमोगुण-प्रधान काली के रूप में उपास्य होती है। लक्ष्मी इच्छा रूप में अभिव्यक्त होती है। जो साधक लक्ष्मी रूप में आद्याशक्ति की उपासना करते हैं, उनके चित्त में इच्छा तत्त्व की प्रधानता होती है, पर बाकी दो तत्त्व-ज्ञान और क्रिया-भी उसमें सहायक होते हैं। इसीलिए लक्ष्मी की उपासना 'ज्ञानपूर्वा क्रियापरा' होती है, अर्थात् वह ज्ञान द्वारा चालित और क्रिया द्वारा अनुगमित इच्छा-शक्ति की उपासना होती है। 'ज्ञानपूर्वा क्रियापरा' का मतलब है कि यद्यपि इच्छा-शक्ति ही मुख्यतया उपास्य है, पर पहले ज्ञान की सहायता और बाद में क्रिया का समर्थन इसमें आवश्यक है। यदि उल्टा हो जाये, अर्थात् इच्छा शक्ति की उपासना क्रियापूर्वा और ज्ञानपरा हो जाये, तो उपासना का रूप बदल जाता है। पहली अवस्था में उपास्या लक्ष्मी समस्त जगत् के उपकार के लिए होती है। उस लक्ष्मी का वाहन गरुड़ होता है। गरुड़ शक्ति, वेग और सेवावृत्ति का प्रतीक है। दूसरी अवस्था में उसका वाहन उल्लू होता है। उल्लू स्वार्थ, अन्धकारप्रियता और विच्छिन्नता का प्रतीक है।

लक्ष्मी तभी उपास्य होकर भक्त को ठीक-ठीक कृतकृत्य करती है। तब उसके चित्त में सबके कल्याण की कामना रहती है। यदि केवल अपना स्वार्थ ही साधक के चित्त में प्रधान हो, तो वह उलूकवाहिनी शक्ति की ही कृपा पा सकता है। फिर तो वह तमोगुण का शिकार हो जाता है। उसकी उपासना लोकल्याण-मार्ग से विच्छिन्न होकर बन्ध्या हो

जाती है। दीपावली प्रकाश का पर्व है। इस दिन जिस लक्ष्मी की पूजा होती है, वह गरुड़वाहिनी है-शक्ति, सेवा और गतिशीलता उसके मुख्य गुण हैं। प्रकाश और अन्धकार का नियत विरोध है। अमावस्या की रात को प्रयत्नपूर्वक लाख-लाख प्रदीपों को जलाकर हम लक्ष्मी के उलूकवाहिनी रूप की नहीं, गरुड़वाहिनी रूप की उपासना करते हैं। हम अन्धकार का, समाज से कटकर रहने का, स्वार्थपरता का प्रयत्नपूर्वक प्रत्याख्यान करते हैं और प्रकाश का, सामाजिकता का और सेवावृत्ति का आह्वान करते हैं। हमें भूलना न चाहिए कि यह उपासना ज्ञान द्वारा चालित और क्रिया द्वारा अनुगमित होकर ही सार्थक होती है-



हजारीप्रसाद द्विवेदी



आधुनिक युग के मौलिक निबंधकार, उत्कृष्ट समालोचक एवं सांस्कृतिक विचारधारा के प्रमुख उपन्यासकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म १९ अगस्त १९०७ में बलिया जिले के दुबे-का-छपरा नामक ग्राम में हुआ था। उनका परिवार ज्योतिष विद्या के लिए प्रसिद्ध था। उनके पिता पं. अनमोल द्विवेदी संस्कृत के प्रकांड पंडित थे। द्विवेदी जी की प्रारंभिक शिक्षा गांव के स्कूल में ही हुई और वहीं से उन्होंने मिडिल की परीक्षा पास की। इसके पश्चात् उन्होंने इंटर की परीक्षा और ज्योतिष विषय लेकर आचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् द्विवेदी जी शांति निकेतन चले गए और कई वर्षों तक वहां हिंदी विभाग में कार्य करते रहे। शांति-निकेतन में रवींद्रनाथ ठाकुर तथा आचार्य क्षितिमोहन सेन के प्रभाव से साहित्य का गहन अध्ययन और उसकी रचना प्रारंभ की। द्विवेदी जी का व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली और उनका स्वभाव बड़ा सरल और उदार था। वे हिंदी, अंग्रेज़ी, संस्कृत और बांग्ला भाषाओं के विद्वान थे। भक्तिकालीन साहित्य का उन्हें अच्छा ज्ञान था। लखनऊ विश्वविद्यालय ने उन्हें डी.लिट. की उपाधि देकर उनका विशेष सम्मान किया था।

आलोचना/साहित्येतिहास

- सूर साहित्य (1936)
- हिन्दी साहित्य की भूमिका (1940)
- प्राचीन भारत में कलात्मक विनोद (1940)
- कबीर (1942)
- नाथ संप्रदाय (1950)
- हिन्दी साहित्य का आदिकाल (1952)
- आधुनिक हिन्दी साहित्य पर विचार (1949)
- साहित्य का मर्म (1949)
- मेघदूत: एक पुरानी कहानी (1957)
- लालित्य मीमांसा (1962)
- साहित्य सहचर (1965)
- कालिदास की लालित्य योजना (1967)
- मध्यकालीन बोध का स्वरूप (1970)
- आलोक पर्व (1971)

निबंध संग्रह

- अशोक के फूल (1948)
- कल्पलता (1951)
- विचार और वितर्क (1954)
- विचार प्रवाह (1959)
- कुटज (1964)
- आलोक पर्व (1972)

उपन्यास

- बाणभट्ट की आत्मकथा (1947)
- चारु चंद्रलेख (1963)
- पुनर्नवा (1973)
- अनामदास का पोथा (1976)

अन्य

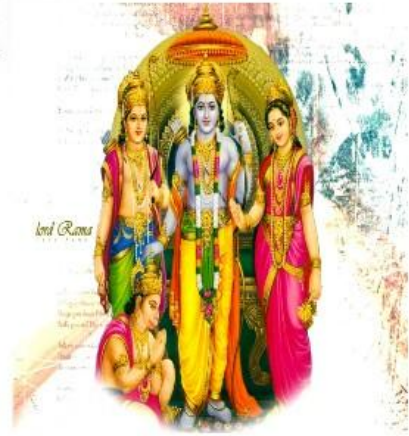
- संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो (1957)
- संदेश रासक (1960)
- मृत्युंजय रवीन्द्र (1970)
- महापुरुषों का स्मरण (1977)



ममता बेहरा, +3 ॥ वर्ष

श्री राम के वनवास से अयोध्या लौटना

यह वो कहानी और कारण है जो लगभग सभी भारतीय को पता है कि इस दिवाली श्री राम जी के वनवास से लौटने की खुशी में मनाते हैं। संघरा के गलत विचारों से पीड़ित हो कर भरत की माता कैकई श्री राम को उनके पिता दशरथ से वनवास भेजने के लिए वचनबद्ध कर देते हैं। ऐसे में श्री राम अपने पिता के आदेश को सम्मान मानते हुए माता सीता और भाई लक्ष्मण के साथ 14 वर्ष के वनवास के लिए निकल पड़ते हैं। वहीं वन में रावण माता सीता को छल से अपहरण कर लेता है। तब श्री राम भुग्रीव के वानर सेना और प्रभु हनुमान के साथ मिलकर रावण की सेना को परास्त करते हैं और श्री राम रावण का वध करके सीता माता को छुड़ा लाते हैं। उस दिन को दशहरे के रूप में मनाया जाता है और जब श्री राम अपने घर अयोध्या लौटते हैं तो पूरे राज्य के लोग उनके आने के खुशी में रात्री के समय दीप जलाते हैं और पुष्पियां मनाते हैं। तब से उस दिन का नाम दीपावली के नाम से जाना जाता है।



पांडवों का अपने राज्य में लौटना

आप ने महाभारत की कहानी तो सुनी ही होगी। कौरवों ने, शकुनी मासा के चाल की मदद से शतरंज के खेल में पांडवों का सब कुछ छिन लिया था और यहाँ तक की उन्हें राज्य छोड़ कर 13 वर्ष के लिए वनवास भी जाना पड़ा। इसी कार्तिक अमावस्या को वो 5 पांडव (युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव) अपने राज्य लौटे थे। उनके लौटने के खुशी में उनके राज्य के लोगों ने दीप जला कर खुशियाँ मनाया। यह भी दिपावली मनाने का एक बहुत ही मुख्य कारण है।



मनीषा साहू, +3 प्रथम वर्ष

जीवन

कुछ दर्द सा है मन में.....
कुछ दर्द सा जीवन में....
घाव है इतना गहरा दिखाई न दे शरीर में
पर चोट है सीने में.....
हर किसी को मिले.....
हर कोई इसमें जले.....
लेकिन ज्वालामुखी बनके नहीं, समंदर से है ये फूले....
आँसू बनके है निकले.....
हर किसी को जीना सिखाता.....
हर किसी का साथ निभाता.....
खुशी है, इसके अंत का परिणाम.....
क्योंकि दर्द है, जीवन का नाम...

पिंकी सिंह
+3 ॥ वर्ष

कौन

अगर न होता चांद, रात में
हम को दिशा दिखाता कौन ?

अगर न होता सूरज, दिन को
सोने-सा चमकता कौन ?

अगर न होतीं निर्मल नदियाँ,
जग की प्यास बुझाता कौन ?

अगर न होते पर्वत, मीठे
झरने भला, बहाता कौन ?

अगर न होते बदल, नभ में
इंद्रधनुष रच पता कौन ?

अगर न होते हम तो बोलो,
ये सब प्रश्न उठता कौन ?

निहारिका मिश्र
+3 प्रथम वर्ष

दिवाली

दिवाली आई दिवाली आई
चारों ओर खुशियों का त्योहार लाई:
दीपक का त्योहार दिवाली आई
आते ही अंधकार मिटाती गई ॥

सबको बोलो दीपक जलाये
साथ में सब त्योहार मनाये;
लक्ष्मी माता को घर बुलाए
सबको बोलो थाल सजाए ॥

जलते दीपक लगते ऐसे
मानो आसमान के तारे जैसे;
आतिश से डर लगता है
पटाखे छोड़ते सब हँसते हँसते ॥

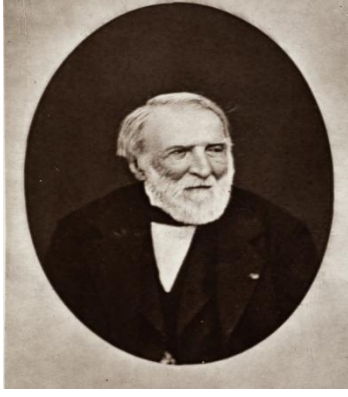
दिवाली मनाने की कारण है
कुछ लोगों का जो कहना है;
राम ने रावण को मारा है
सीता माता को वापस लाया है ॥

आलोक के त्योहार है दिवाली
सबके मुँह में मिठाई डाली;
दीपक कभी रखो ना खाली
सबके साथ बोलो शुभ दिवाली ॥

स्वर्णप्रभा महारणा

+3 प्रथम वर्ष





गार्सी द तासी

आज तक की जानकारी के हिसाब से, हिंदी साहित्य का सबसे पहला इतिहास एक फ्रेंच विद्वान ने लिखा है और उसके व्यवस्थित रूप के पहले इतिहास को लिखने का श्रेय भी एक फ्रेंच को ही जाता है। वह है फ्रेंच विद्वान गार्सी द तासी ।

वे हिंदुस्तानी साहित्य के महत्व को स्वीकार करते थे तथा किसी अन्य भाषा से कम नहीं समझते थे। उन्होंने उर्दू - हिंदी अथवा हिंदुस्तानी साहित्य का सर्व प्रथम ग्रंथ " इस्तवार द ला लिट्रेच्युर ऐंदुई ऐ ऐंदुस्तानी "

(फ्रेंच विद्वान , फ्रेंच भाषा में) लिखा। इस ग्रंथ में हिंदी और उर्दू के अनेक कवियों का विवरण वर्णक्रमानुसार दिया गया है। इसका प्रथम भाग 1839 में तथा द्वितीय भाग 1847 में प्रकाशित हुआ था, और 1871 में इसका दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ जिसमें इसे तीन खंडों में विभक्त करते हुए पर्याप्त संशोधन परिवर्तन किये गये। इस ग्रंथ का महत्व केवल इसी दृष्टि से है कि इसमें हिंदी काव्य का सर्वप्रथम इतिहास प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है तथा कवियों के रचनाकाल का भी निर्देश किया गया है।

भारत से दूर बैठ कर विदेशी भाषा में सर्वप्रथम इस प्रकार का प्रयास करना भी अपने आप में कम महत्वपूर्ण नहीं है। वस्तुतः किसी भी क्षेत्र में किये गए प्रारंभिक एवं प्राथमिक प्रयास का महत्व प्रायतः उसके उपलब्धियों की दृष्टि से नहीं, अपितु नयी दिशा की ओर अग्रसर होने की दृष्टि से ही माना जाता है। इसीलिए उनके ग्रंथ में अनेक त्रुटियों के होते हुए भी उन्हें हिंदी साहित्य इतिहास लेखन की परम्परा में, उसके प्रवर्तक के रूप में गौरवपूर्ण स्थान दिया गया है और उन्हें हिंदी साहित्य के पहला इतिहासकार माना गया है।

सस्मिता महंती

+3 प्रथम वर्ष





ए पी जे अब्दुल कलाम

"सपने वो नहीं होते जो आप सोने के बाद देखते हैं , सपने तो वो होते हैं जो आपको सोने नहीं देते" । ऐसा कहना है भारतरत्न डॉ अबुल पकिर जैनुलाअबदीन अब्दुल कलाम जी का। जिन्होंने अंतरिक्ष और रक्षा विभाग में इतना बड़ा योगदान दिया है जिसे हम शब्दों में बयान नहीं कर सकते। रक्षा विभाग में योगदान की वजह से उन्हें सब मिसाइल मैन के नाम से जानते हैं । अब्दुल कलाम 2002 से 2007 तक भारत के ग्यारह राष्ट्रपति बने रहें, जिन्हें ये पद technology और साइंस में उनके विशेष योगदान के लिए मिला, न कि गंदी राजनीति की वजह से। अब उनकी उम्र ढल चुकी थी, जिस उम्र में व्यक्ति आराम करने की सोचते थे, वे कई जगह पर प्रोफेसर के तौर पर कार्यरत रहे। 27 जुलाई 2015 को अध्यापन के दौरान ही उन्हें दिल का दौर पड़ा, और वो हमें छोड़के चले गए। अब्दुल कलाम का कहना है कि- "जीवन में कठिनाईयां हमें बर्बाद करने नहीं आती हैं, बल्कि ये हमारे छिपे हुए सामर्थ्य और शक्तियों को बाहर निकलने में हमारी मदद करती हैं, कठिनाईयां को यह जान लेने दो की आप उससे भी ज्यादा कठिन हो"।

चिंतनपरक रचनायें

- **इग्नाइटेड माइंड्स: अनलीशिंग द पावर विदीन इंडिया:**
- **इंडिया- माय-ड्रीम**
- **एनविजनिंग अन एमपावर्ड नेशन: टेक्नालजी फार सोसायटल ट्रांसफारमेशन**

आत्मकथात्मक रचनायें

- **विंग्स ऑफ फायर: एन आटोबायोग्राफी ऑफ एपीजे अब्दुल कलाम:** सह लेखक - अरुण तिवारी
- **साइंटिस्ट टू प्रेसिडेंट**

जय हिंद
लिजा मिश्र, +3 ॥ वर्ष



नवधाभक्ति

भक्ति साधन तथा साध्य द्विविध है। साधक साधन में ही जब रस लेने लगता है, उसके फल की ओर से उदासीन हो जाता है। यही साधक का साध्य बन जाता है। पर प्रत्येक साधन का अपना फल भी है। भक्ति भी साधक को पूर्ण स्वाधीनता, पवित्रता, एकत्वभावना तथा प्रभुप्राप्ति जैसे मधुर फल देती है। प्रभुप्राप्ति का अर्थ जीव की समाप्ति नहीं है, सायुज्य और सखाभाव से प्रभू में अवस्थित होकर आनन्द का उपभोग करना है। गीता में कहा गया है कि भक्ति ही एक ऐसा साधन है जिसको सभी सुगमता से कर सकते हैं और जिस पर सभी मनुष्य का अधिकार है। संसार में धर्म को मानने वाले जितने लोग हैं उनमें अधिकांश ईश्वर-भक्ति को ही पसंद करते हैं। भक्ति के प्रधान दो भेद हैं - एक साधनरूप और दूसरा साध्यरूप। साधनरूप को वैद्य भक्ति और नवधा भक्ति भी कहा जाता है। श्रीमद्भागवत में प्रह्लाद जी ने कहा है 'भगवान विष्णु' के नाम, रूप, गुण और प्रभाव आदि का श्रवण, कीर्तन और स्मरण तथा भगवान की चरण सेवा, पूजन और वंदन एवं भगवान में दासभाव, सख्यभाव और अपने को समर्पण कर देना - यह नौ प्रकार की भक्ति यानी श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवान, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन यह नौ प्रकार की भक्ति नवधा भक्ति के नाम से जानी जाती है।

★ श्रवणभक्ति -- भगवान के प्रेमी भक्तों द्वारा कथित भगवान के नाम रूप, गुण, प्रभाव, लीला, तत्व और रहस्य की आत्ममयी कथाओं का श्रद्धा और प्रेम पूर्वक श्रवण करना एवं प्रेम में मुग्ध हो जाना श्रवण भक्ति का स्वरूप है।

★ कीर्तनभक्ति -- भगवान के नाम, रूप, गुण, प्रभाव, चरित्र, तत्व और प्रेमपूर्वक उच्चारण करते - करते शरीर में रोमांच, कंठवरोध, अश्रुपात, प्रफुल्लता, मुग्धता आदि का होना कीर्तन - भक्ति का स्वरूप है।

★ स्मरणभक्ति-- ईश्वर की लीला, कथा, महत्व, शक्ति, स्त्रोत इत्यादि को परम श्रद्धा साहित्य अतृप्त मन से निरंतर सुनना स्मरण भक्ति का स्वरूप है।

★ पादसेवन -- ईश्वर के चरणों का आश्रय लेना और उन्हीं को अपना समझना इस भक्ति का स्वरूप है।

★ अर्चनभक्ति -- मन, वचन, और कर्म द्वारा ईश्वर के चरणों का पूजन करना अर्चन भक्ति का स्वरूप है।

★ वंदनभक्ति -- समस्त चराचर भूतों को परमात्मा का स्वरूप समझ कर शरीर या मन से प्रणाम करना और ऐसा करते हुए भागवत प्रेम में मुग्ध होना वंदन भक्ति है ।

★ दास्यभक्ति -- भगवान के गुण , तत्व , रहस्य आदि प्रभाव को जानकर श्रद्धा - प्रेमपूर्वक उनकी सेवा करना और उनकी आज्ञा का पालन करना दास्य -भक्ति है ।

★ सख्यभक्ति -- ईश्वर को ही अपना परम मित्र समझ कर अपना सर्वस्व उसे समर्पण कर देना तथा सच्चे से अपने पाप पुण्य का निवेदन करना सख्यभक्ति का स्वरूप है ।

★ आत्मनिवेदन -- अपने आपको भगवान के चरणों में सदा के लिए समर्पण करदेना और कुछ भी अपनी स्वतंत्र सत्ता न रखना । यह भक्ति की सबसे उत्तम अवस्था मानी गयी है ।

◆ रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी का श्री राम के प्रति भक्ति दास्यभक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है

◆ उसी प्रकार भगवान कृष्ण के प्रति मीरा की भक्ति मधुराभक्ति का अनन्य उदाहरण है ।

◆ कृष्ण के लिए सुदामा का भक्ति सख्यभक्ति का अत्यंत सुंदर उदाहरण है ।

शुभश्री शताब्दी दास

+३ प्रथम वर्ष (कला)



भ्रष्टाचार के जिम्मेदार कौन ?

आज देश में सब कहते हैं हो रहा है भ्रष्टाचार
कभी किसी ने सोचा कौन है इसका जिम्मेदार।

कभी रास्ते में पुलिस रोके और पूछे लाइसेंस है आपके पास
सबसे पहले हम ही कह देते देख लो काम हो जाये लेकर सौ या पचास।

कभी हम किसी कॉलेज में दाखिला लेने जाते हैं
पढाई हमारी काम न आये तो पैसों की ताकत दिखलाते हैं।

सरकारी नौकरी नहीं मिलती बिना पैसे ना कोई सुनवाई है
पैसे देकर नौकरी पाने की प्रथा भी हमने ही तो बनाई है।

लोग कहते हैं आज के नेता हैं भ्रष्ट उनमें है खोट
हम लोगों ही तो जाति, धर्म के आधार पर बाँटते हैं वोट।

भ्रष्टाचार विरोधी तंत्र जब भ्रष्टाचार मिटाते हैं
उसमें भी पैसे देकर हम अपना काम पहले करवाते हैं।

भ्रष्टाचार से होती है देश के विकास की रफ्तार मंद
हम सब मिलकर खत्म करें भ्रष्टाचार का गंद।

भ्रष्टाचार न पड़े हम सब पर भारी
आओ मिलकर ले भ्रष्टाचार खत्म करने की जिम्मेदारी।

विशाल गर्ग

संग्रहीत: सोनालि राउत, +3 ॥ वर्ष

समय सबके लिए मूल्यवान होता है। वो किसी का इंतज़ार नहीं करता। वो अपने रास्ते पे चलता जाता है। लोग समय के अनुसार चलते हैं। अगर समय के अनुसार नहीं चलेंगे तो वो पीछे रह जाएंगे। कुछ लोग होते हैं, जो समय के मूल्य को नहीं पहचानते हैं, जिसके लिए उन्हें पछताना भी पड़ता है।

बीते हुए समय को जब हम सोचते हैं तो कभी खुशी और कभी गम मिलता है। लेकिन उस समय को हम नहीं पा सकते हैं, क्योंकि वह बीत चुका होता है।

इसीलिए लोगों को समय के नियमों के आधार पर चलना चाहिए, ताकि बाद में उन्हें पछताना ना पड़े।
इसीलिए कहा गया है कि "समय का तुम इंतज़ार करो लेकिन समय किसी का इंतज़ार नहीं करता"।

संध्यरानी साहू

पद्मावत

सालिक मुहम्मद जायसीकृत 'पद्मावत' (1540) को इस परंपरा का प्रौढ़तम काव्य माना जाता है। इसमें चित्तौड़ के राजा रत्नसेन एवं सिंहल की राजकुमारी पद्मावती के प्रेमविवाह एवं विवाहोत्तर जीवन का चित्रण सार्मिक रूप में हुआ है। इसकी कथावस्तु को आलोचकों ने दो खंडों रत्नसेन - पद्मावती के विवाह तक पूर्वार्द्ध भाग एवं शेष उत्तरार्द्ध भाग में विभाजित करते हुए पूर्वार्द्ध को कल्पनाप्रसूत एवं उत्तरार्द्ध को ऐतिहासिक माना है, किंतु अब ये दोनों ही निष्कर्ष विवादस्पद हो गये हैं।



'पद्मावत' मूलतः रोमांचक शैली का कथा-काव्य है, किंतु आलोचकों ने इसे आदर्शपरक महाकाव्यों की कसौटी पर कसने का प्रयास किया, फलस्वरूप उन्हें निराशा का सामना करना पड़ा। 'पद्मावत' के विभिन्न वस्तु वर्णन में नगर, युद्ध, समुद्र यात्रा, रूप-सौन्दर्य, ऋतु आदि चित्रित हैं। जहाँ तक पात्रों द्वारा स्थायी भावों की व्यंजना है, मुख्यतः वे तीन हैं: रति, शोक एवं उत्साह। इस दृष्टि से इसे रूपक-काव्य भी कहा जा सकता है।

बेटी

बेटा वंश है, तो बेटी अंश है।
बेटा मान है, तो बेटी शान है।
बेटा संस्कार है, तो बेटी संस्कृति है।
बेटा आकार है, तो बेटी प्रकार है।
बेटा आधार है, तो बेटी उदार है।
बेटा धन है, तो बेटी मन है।
बेटा गीत है, तो बेटी संगीत है।
बेटा प्रेम है, तो बेटी पूजा
बेटा एक है ,तो बेटी जैसी ना कोई दूजा।
कादम्बिनी पंडा, +3॥ वर्ष

हारना तब आवश्यक हो जाता है
जब लड़ाई "अपनो" से हो !
और जीतना तब आवश्यक हो जाता है
जब लड़ाई "अपनो आप" से हो ! !
मंगजिले मिले ,ये तो मुकद्दर की बात है
हम कोशिश ही न करे ये तो गलत बात है
किसी ने बर्फ से पूछा कि,
आप इतने ठंडे क्यों हो ???
बर्फ ने बड़ा अच्छा जवाब दिया :-
"मेरा अतीत भी पानी ;
मेरा भविष्य भी पानी ..."
फिर गरमी किस बात पे रखूं

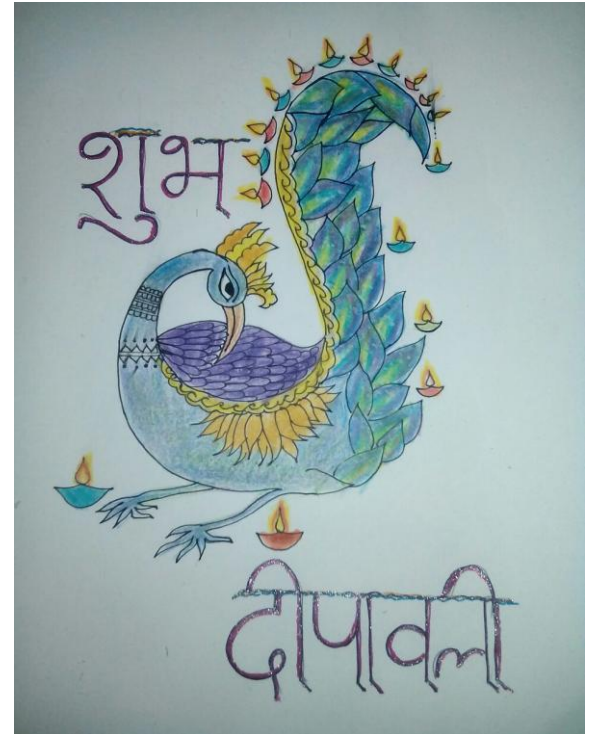
पिता क्या है?

हरिवंशराय बच्चन

पिता एक उम्मीद है, एक आस है
परिवार की हिम्मत और विश्वास है,
बाहर से सख्त अंदर से नर्म है
उसके दिल में दफन कई मर्म हैं।
पिता संघर्ष की आंधियों में हौसलों की दीवार है
परेशानियों से लड़ने को दो धारी तलवार है,
बचपन में खुश करने वाला खिलौना है
नींद लगे तो पेट पर सुलाने वाला बिछौना है।
पिता जिम्मेवारियों से लदी गाड़ी का सारथी है
सबको बराबर का हक़ दिलाता यही एक
महारथी है,
सपनों को पूरा करने में लगने वाली जान है
इसी से तो माँ और बच्चों की पहचान है।

पिता ज़मीर है पिता जागीर है
जिसके पास ये है वह सबसे अमीर है,
कहने को सब ऊपर वाला देता है ए संदीप
पर खुदा का ही एक रूप पिता का शरीर है।

शबाना, +3॥ वर्ष



प्रियंका प्रियदर्शनी परिडा, +3॥ वर्ष

धरती का हरित श्रृंगार

हरियाली दिखती नहीं
सूख रहे सब फूल।
क्यूं बेशर्मी से हंस रहे
आंखो पर डाले धूल।
-करो धरती का हरित श्रृंगार

सब धुंआ धुंआ सा कर बैठे
पशु-पंछी ढूंढे आवास।
हरियाली यूं रुठ चली
ले जंगल से सन्यास।
-करो धरती का हरित श्रृंगार

कभी हरे भरे इस गांव में
होती थी पीपल की छांव।
जल रहा हर पांव पांव
अब पत्थर हो गये गांव।
-करो धरती का हरित श्रृंगार

चहक महक सब छोड़ चले
संग हरियाली और गुल।
सजा रहे हम महलों को
लाकर कागज के फूल।
-करो धरती का हरित श्रृंगार

न तुम अंधे न हम अंधे
फिर अंधा कौन इंसान
क्यूं ठंड रहे इस आंगन मे
जब घर बना रेगिस्तान।
-करो धरती का हरित श्रृंगार

सुनिल दुबे "भगवा"

संग्रहीत : सोनालि राउत, +3 ॥ वर्ष





उठो जागो और तब तक नहीं रुको, जब तक लक्ष्य ना प्राप्त हो जाए।

एक विचार लो। उस विचार को अपना जीवन बना लो, उसके बारे में सोचो, उसके सपने देखो, उस विचार को जिओ। अपने मस्तिष्क, मांसपेशियों, नसों, शरीर के हर हिस्से को उस विचार में डूब जाने दो, यही सफल होने का तरीका है।

किसी दिन, जब आपके सामने कोई समस्या न आए, आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि आप गलत मार्ग पर चल रहे हैं।

ब्रह्मांड की सारी शक्तियां पहले हमारी हैं। वो हम ही हैं जो अपनी आंखों पर हाथ रख लेते हैं और फिर रोते हैं कि कितना अंधकार है।

जो तुम सोचते हो वो हो जाओगे ।यदि तुम खुद को कमजोर सोचते हो, तुम कमजोर हो जाओगे, अगर ताकतवर सोचते हो तो ताकतवर हो जाओगे।

खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है

सुभद्रा कुमारी चौहान



कहानी संग्रह

- बिखरे मोती (१९३२)
- उन्मादिनी (१९३४)
- सीधे साधे चित्र (१९४७)

कविता संग्रह

- मुकुल
- त्रिधारा
- प्रसिद्ध पंक्तियाँ
- यह कदंब का पेड़ अगर माँ होता यमुना तीरे। मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे-धीरे॥
- सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी, बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी, गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी, दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
- मुझे छोड़ कर तुम्हें प्राणधन सुख या शांति नहीं होगी यही बात तुम भी कहते थे सोचो, भ्रान्ति नहीं होगी।

जीवनी

'मिला तेज से तेज'

सुभद्रा कुमारी चौहान (१६ अगस्त १९०४-१५ फरवरी १९४८)

हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका थीं। उनके दो कविता संग्रह तथा तीन कथा संग्रह प्रकाशित हुए पर उनकी प्रसिद्धि झाँसी की रानी कविता के कारण है। ये राष्ट्रीय चेतना की एक सजग कवयित्री रही हैं, किन्तु इन्होंने स्वाधीनता संग्राम में अनेक बार जेल यातनाएँ सहने के पश्चात अपनी अनुभूतियों को कहानी में भी व्यक्त किया। वातावरण चित्रण-प्रधान शैली की भाषा सरल तथा काव्यात्मक है, इस कारण इनकी रचना की सादगी हृदयग्राही है।

उनका जन्म नागपंचमी के दिन इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गांव में रामनाथसिंह के जमींदार परिवार में हुआ था। बाल्यकाल से ही वे कविताएँ रचने लगी थीं। उनकी रचनाएँ राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण हैं।^[1] सुभद्रा कुमारी चौहान, चार बहने और दो भाई थे। उनके पिता ठाकुर रामनाथ सिंह शिक्षा के प्रेमी थे और उन्हीं की देख-रेख में उनकी प्रारम्भिक शिक्षा भी हुई। १९१९ में खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ विवाह के बाद वे जबलपुर आ गई थीं। १९२१ में गांधी जी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली वह प्रथम महिला थीं। वे दो बार जेल भी गई थीं।^[2] सुभद्रा कुमारी चौहान की जीवनी, इनकी पुत्री, सुधा चौहान ने 'मिला तेज से तेज' नामक पुस्तक में लिखी है। इसे हंस प्रकाशन, इलाहाबाद ने प्रकाशित किया है। वे एक रचनाकार होने के साथ-साथ स्वाधीनता संग्राम की सेनानी भी थीं। डॉ० मंगला अनुजा की पुस्तक सुभद्रा कुमारी चौहान उनके साहित्यिक व स्वाधीनता संघर्ष के जीवन पर प्रकाश डालती है। साथ ही स्वाधीनता आंदोलन में उनके कविता के जरिए नेतृत्व को भी रेखांकित करती है।^[3] १५ फरवरी १९४८ को एक कार दुर्घटना में उनका आकस्मिक निधन हो गया था।^[4]



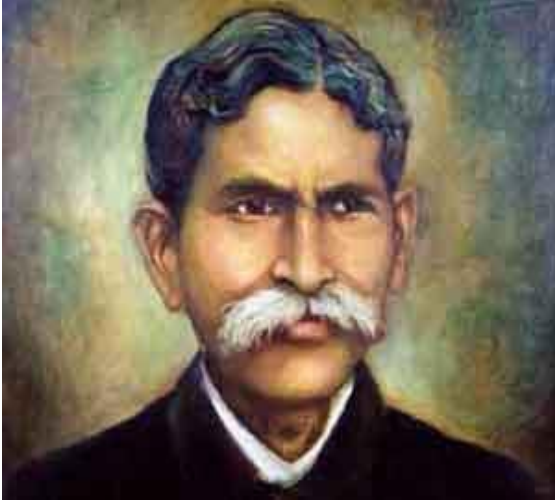
भारतीय नारी

नारी ने की उन्नति
पूरा देश बना प्रगतिशील
सम्मान हुआ उनका
राष्ट्र निर्माण में उठा पहला कदम।

जब जब हुई लक्ष्मीबाई, प्रतिभा पाटिल, लता मंगेशकर जैसी नारियां,
तब तब देश को मिली नई ऊँचाई
जिसे अभी तक नहीं छू पाया और कोई।
मानव हित के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने वाली
देश के लिए हर तरह से मर मिटने वाली
इतिहास को कभी न भुला देनेवाली
अपनी ऊर्जस्विता को प्रकट करनेवाली
इस युग में भी नारी दिखा रही अपनी प्रतिभा
कर रही राष्ट्र रक्षा, सेवा व निर्माण

स्नेह की मूर्ति, आत्मविश्वास से भरी कर्मठ,
सहनशीलता एवं ममता से भरपूर नारी।
हर एक भूमिका निभाती हुई
एक माँ, बेटी, बहू, पत्नी, के रूप में अपनी पहचान खुद बनानेवाली
देश का नाम रोशन करनेवाली।

हर मुश्किल का सामना करने को तैयार
सम्मान, सामना अधिकार पाना हर नारी का अधिकार
देश की उन सारी नारियों को नमन
जो कर रही देश का नाम रोशन।



अमृतमय

ओड़िया के प्रसिद्ध कवि गंगाधर मेहेर का जन्म ९ अगस्त १८६२ को सम्बलपुर में हुआ था और उनका देहावसान ४ अप्रैल १९२४ को ।
गंगाधर मेहेर जी ओड़िया साहित्य के 'प्रकृति-कवि' माने जाते हैं। गंगाधर जी परंपरा और आधुनिकता के समन्वयवादी और कर्मयोगी कवि थे। उनकी कविताओं में आशावाद की स्पष्ट झलक है। उनकी साहित्यिक कृतियों में

'तपस्विनी', 'प्रणय-वल्लरी', 'कीचक-वध', 'उत्कल-लक्ष्मी', 'अयोध्या-दृश्य', 'पद्मिनी', 'अर्घ्यथाली' और 'कृष्क-संगीत' प्रमुख हैं।

उनकी सारी कृतियों का संकलन "गंगाधर ग्रन्थावली" कई बार प्रकाशित होकर लोकप्रिय बन चुकी है।

उनका "तपस्विनी" महाकाव्य सीता-चरित्र पर आधारित है और इसे 'सीतायन' कहा जा सकता है। इस में रामचन्द्र द्वारा परित्यक्ता सीता को 'तपस्विनी' के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

मैं तो बिन्दु हूँ
अमृत-समुन्दर का,
छोड़ समुन्दर अम्बर में
ऊपर चला गया था ।
अब नीचे उतर
मिला हूँ अमृत- धारा से ;
चल रहा हूँ आगे
समुन्दर की ओर ।

पाप-ताप से राह में
सूख जाऊँगा अगर,
तब झरूँगा मैं ओस बनकर ।
अमृतमय अमृत-धारा के संग
समा जाऊँगा समुन्दर में ॥

- गंगाधर मेहेर

- अनुवाद: डॉ. हरेकृष्ण मेहेर

यादों के गलियारों से

14 सितम्बर 2017 - हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित
संगोष्ठी की कुछ यादें



धन्यवाद